८. आंतरिक शत्रुओं पर नियंत्रण

धाक जमाई : शिवाजी महाराज के चारों ओर बारह मावल के मावले इकट्‌ठे हुए । शिवाजी महाराज जो कहते; वे वही करते । वे ऐसा मानते थे, 'जीना है तो स्वराज्य के लिए और मरना है तो स्वराज्य के लिए ।' वे सीधे-सादे मराठा थे । शिवाजी महाराज उन्हें प्राणप्रिय थे परंतु ऐसे भी कुछ लोग थे; जिन्हें शिवाजी महाराज के कार्य से ईर्ष्या होती थी । ऐसे लोगों पर नियंत्रण रखना शिवाजी महाराज के लिए आवश्यक हो गया था ।

खंडोजी और बाजी घोरपड़े नामक मराठा सरदार आदिलशाह की नौकरी में थे । आदिलशाह ने उन्हें शिवाजी महाराज के विरुद्‌ध भड़काया । कोंढाणा प्रदेश में उन्होंने बड़ी अराजकता फैला दी थी । मगर शिवाजी महाराज ने उनकी दाल न गलने दी । उन्होंने उन्हें वहाँ से मार भगाया ।

फलटण के बजाजी नाईक-निंबालकर शिवाजी महाराज के साले थे । शिवाजी महाराज को उनके विरुद्‌ध लड़ना पड़ा फिर भी निंबालकर घराने के अन्य व्यक्ति शिवाजी महाराज के साथ रहे ।

शिवाजी महाराज के सुपे परगना में उनका एक रिश्तेदार संभाजी मोहिते था । उसने भी शिवाजी महाराज के विरोध में कारवाइयाँ शुरू की । शिवाजी महाराज ने सुपे परगना में जाकर उसे बंदी बना लिया और उसे कर्नाटक राज्य में भेज दिया । शिवाजी महाराज कर्तव्य के आगे रिश्तों-नातों को नहीं मानते थे ।

जावली के चंद्रराव मोरे : शिवाजी महाराज के कार्य की महानता को सभी मावलों ने स्वीकार किया । उनका नाम चारों ओर गूँजने लगा । शिवाजी महाराज प्रजा के राजा बन गए किंतु यह बात कुछ लोगों की आँखों में खटकती थी । जावली के मोरे ऐसे लोगों में से एक थे । मोरे जावली के जागीरदार थे । उनकी जागीर रायगढ़ से कोयना घाटी तक थी । वे बीजापुर के आदिलशाह के जागीरदार थे । आदिलशाह ने उन्हें 'चंद्रराव' की उपाधि दी थी । जावली में बड़े घने जंगल थे । वहाँ दिन में भी सूर्य की किरणों का प्रवेश नहीं होता था । उसमें बाघ, भेड़िये, भालू आदि जंगली जानवर रहते थे । मोरे की जावली मतलब बाघ का जाल ही थी । इस कारण कोई भी मोरे को छेड़ने की हिम्मत नहीं करता था लेकिन यह साहस वीर शिवाजी महाराज ने कर दिखाया ।

कारण यह था ई.स. १६४५ में दौलतराव मोरे का देहांत हो गया । अतः उनके उत्तराधिकारियों में झगड़े शुरू हो गए । शिवाजी महाराज ने यशवंतराव मोरे की सहायता की । उनकी सहायता से यशवंतराव मोरे जावली की गद्‌दी पर चंद्रराव के रूप में बैठे । उस समय यशवंतराव ने शिवाजी महाराज को नजराना देना स्वीकार किया । उनके कार्य में सहायता देना भी स्वीकार किया परंतु गद्‌दी पर बैठते ही वह सब कुछ भूल गया । कौन शिवाजी महाराज और कैसा वादा ! वह उपेक्षापूर्ण से व्यवहार करने लगा । स्वराज्य के प्रदेशों पर आक्रमण करना, प्रजा को कष्ट देना आदि विभिन्न प्रकार की हरकतें यशवंतराव करने लगा । शिवाजी महाराज जान गए कि यदि इसी समय मोरे को सही रास्ते पर न लाया गया

तो स्वराज्य को क्षति पहुँचेगी ।

विद्रोह करने पर मारे जाओगे : शिवाजी महाराज ने यशवंतराव को पहले एक कठोर पत्र लिखा, 'आप स्वयं को राजा कहलवाते हैं । राजा तो हम हैं । भगवान शंकर ने हमें राज्य दिया है । इसलिए आप अपने-आपको राजा न कहलवाएँ ।'

यशवंतराव मोरे ने उद्‌दंडता से उत्तर दिया, 'आप कल राजा बने हैं । आपको राज्य किसने दिया ? जावली आओगे तो उलझन में फँस जाओगे । हमें ईश्वर की कृपा से आदिलशाह ने राजा की उपाधि, छत्र-चामर और सिंहासन मेहरबान होकर दिया है । यदि आप यहाँ आएँगे तो परिणाम बुरा होगा ।'

शिवाजी महाराज ने उसे चेतावनी दी, 'जावली छोड़कर, राजा की उपाधि और छत्र-चामर फेंककर, रूमाल से हाथ बाँधकर मिलने और हमारी सेवा करने के लिए चले आओ । इतने पर भी यदि गद्‌दारी करोगे तो मारे जाओगे ।'

जावली के चारों ओर घना जंगल था । रायरी का किला जीतना कठिन था । मोरे के पास आदमी भी बहुत थे । जावली जीतना सरल न था । पूरी तैयारी के साथ शिवाजी महाराज ने जावली पर आक्रमण किया । लगभग एक महीने तक यशवंतराव लड़ता रहा लेकिन उसके बहुत-से सैनिक मारे गए । अंत में वह अपने बेटों को लेकर रायरी के किले में भाग गया । शिवाजी महाराज ने जावली को जीत लिया और रायरी की ओर बढ़े । शिवाजी महाराज ने रायरी के किले को घेर लिया । यशवंतराव तीन महीने तक पूरी शक्ति के साथ लड़ता रहा परंतु अंत में उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा ।

रायगढ़ किला : जावली की विजय बड़ी महत्त्वपूर्ण थी । इससे शिवाजी महाराज के

रायगढ़

स्वराज्य का विस्तार पहले से दुगुना हो गया । यशवंतराव की सेना भी शिवाजी महाराज से आकर मिल गई । रायरी का विशाल किला स्वराज्य के अंतर्गत आ गया । इससे शिवाजी महाराज बहुत प्रसन्न हुए । उन्होंने इस किले का नाम 'रायगढ़' रखा । उसके बाद उन्होंने पासवाली भोरप्या पहाड़ी पर एक नया किला बनवाया । उसका नाम रखा 'प्रतापगढ़' ।

स्वाध्याय

१. गलत जोड़ी पहचानो :

(अ) फलटण - निंबालकर
(आ) जावली - मोरे
(इ) सुपे - जाधव

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

(अ) जावली के मोरे को आदिलशाह ने कौन-सी उपाधि दी थी ?
(आ) जावली की विजय महत्त्वपूर्ण क्यों थी ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

(अ) जावली के मोरे को छेड़ने की हिम्मत कोई क्यों नहीं कर पाता था ?
(आ) शिवाजी महाराज ने यशवंतराव मोरे को कौन-सा कठोर पत्र भेजा ?

उपक्रम

(अ) रायगढ़ के चित्रों का संग्रह करो ।
(आ) दिवाली की छुट्टियों में अपने मित्रों के साथ रायगढ़ की प्रतिकृति तैयार करो ।

6I4JUL